स्वप्नप्रकाश ॥

श्रीमत्सीतारामचन्द्र कमलकेभ्रमर श्रीमहा-
राज कुमार रसिकराम किशोर शरण
बाबू नन्दकिशोर दुबेरचित

जिसमें

श्रीलड़ैतीलाल जनकनन्दनी दशरथराजकुमार
परमरसखानके स्वप्नप्रकाशकी लीलावर्णनहै

भक्त जनोंके आनन्द बिलास हेत

455

लखनऊ

मुंशीनवल किशोरके यंत्रालयमें शुद्धता पूर्व्वकछपा
अप्रैलसन् १८८४ ई०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशायनमः॥

स्वप्नप्रकाश॥

सोरठा॥

सीताराम उदार भरत लषण रिपुदमन वर॥
मम उर करहुबिहार सर्वसुखदफलभक्तिकर १

दोहा॥

शहर जौनपुर अवध को प्रथम द्वार अभिराम॥
बसत वर्ण चारिउजहां परिपूरित मन काम १
जन्मभूमि अति सुखद तहँ प्रकट्यो नंदकिशोर॥
करुणा करि संतन दई राम भक्ति बर जोर २
संसकार गुरुवर दयो नर्म सख्य को भाव॥
ताते निशि बासर रहै मनमें पूरो चाव ३
सीताबर की कृपाते काशी पति पद पास॥
राम नगर निज कुलसहित पायो परम सुपास ४
उत्रायन रवि फालगुन कृष्ण अष्टमी मान॥
वेद चंद्र रस ब्रह्म लखि विक्रम साल सुजान ५
ग्रंथ भावना श्रवण करि परमानंद प्रकाश॥
पंची कृत माता तज्यो असी घाट सुखरास ६
प्रेतकृत्य करि वेद विधि भयो ग्रसित बहु शोक॥
तबै देखायो स्वप्न में राघव लीला थोक ७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मातु अनुग्रह सों लख्यो अति अद्भुत सुख रास ॥
महलन की लीला ललित ताको करों प्रकाश ८
शहर पनाही भीत बड़ि फाटक मणिकी सोह ॥
जड़े बड़े तरु हीरके देखतही मन मोह ९
गुल बूटे मणि नीलके तामें बहु अश्लोक ॥
रघुबंशिन के सुयश की लिखी बकाई नोक १०
नवो खंड को उच्च जहँ फाटक पुष्ट प्रकाश ॥
तहां सवारी बाजि गज रथ सुख यान निवास ११

मधुभारछन्द ॥

मातेमतंग। होदेसुरंग ॥ भल झोलवान। गुणके निधान१
खासेतुरंग। भारीउमंग॥ मणिजड़ितसाजि। रघुराजबाजि२
दो॰ लसत सवार किशोरवय प्यादे काम समान ॥
रसमय बर नौबतझरत फाटकशोभाखान १२
तहां मिलेमोहिं कृपा करि चारुशील हनुमान ॥
तिनकेसंग स्वश्रूयधरि भीतरकीन पयान १३
देखतचल्योमहलकीपांती। दिनकरमंदलखतजेहिकांती॥
सत्तावरणमहलइक देखा। मणिजड़ाव कुंदनकीरेखा १
दो॰ जानिखास निजमहल तें श्रीसियरामकृपाल ॥
प्रबिशिबंधुहियचरितकरिमोकहँकियोनिहाल१४
लख्योंलषणलाड़िलेसोहाये। कियोंप्रणाममनोरथपाये॥
उठिदेअंकमालकरिआदर। बैठायोसमीपनिजसादर२
गांधर्बीकोनृत्यसोहायो। मसनदढिगबैठारि देखायो॥
प्रभु किश्ती अनेकमँगवाई। भूषणबसनदेखिमनभाई ३
निजकरक्रीटमुकुटशिरधरेऊ। दासनजुलुफअतरसोंभरेऊ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुर्रा अरुशिर पेचकलंगी। कुंडलयुतअति प्रेमउमंगी१४

दोहा॥

गोपगुंज मणि मालदिय नव रतननि छविछाय॥
मनु नवग्रह बसि कंठउर चहत सिफारसिराय १५
नव निधि अकन सों अधिकमणि कंकन करदीन॥
जिनहिं निरखिदिगपतिनकोलगतिसाहिबीक्षीन१६
दई अँगूठो बिविध बिधि सुअनूठी अनमोल॥
बने पने आदिक रतन अतन यतन युतकोल १७
पहुंची मति पहुंची न जहँ बिश्वकर्मनकीजत्र॥
छबिपहुंचीमणिगनिनइमि लजतसुरबिमुखतत्र १८
जरकसको जामा ललित गुखुरू बनत समेत॥
तापर पटुका जरकसी मुक्त छोर छबि देत १९
अंगद ताही भांतिके दियेउ उमंगद साजि॥
जगरमगरजिनकीमणिनकीन्ह्योभुजनिबिराजि २०
जर कस जामें परचमक उर मणिमाल बिभाव॥
कियो रतन दरियाव मोहिं रामदया दरियाव २१
ललित इजार इजारबंद मुक्ता गुच्छ ललाम॥
नक मुक्ता मुखचन्द्रमें गजमुक्तन की दाम २२
चमर छत्र व्यज्जन छड़ी रबि शशि मुखी समेत॥
नुकरा घोड़ा बांकुरा दीन्ह्यो करि अति हेत २३

सवैया॥

एकतोजातिदुबेद्विजराजसियायुतमोहिंभजैकरिप्यारको
तीसरेनामवही इनको कलिमेंजोकरैहैंचरित्रअपारको।
चौथे सुनमैसखायेभयेप्रियशेषके आयबढ़ाय दुलारको।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन्यहैंरामगरीबनेवाजकियांअपनी समनन्दकुमारको १
सो० हर्षिकह्यो सुखधाम चारुशीलके वचनसुनि ॥
गुणमणि पूरण काम भे करुणा ते रावरी २
दो० प्रियलीला सिय रामकिय निज माया विस्तार ॥
हुलसिहँसततिनपरजेमोहिंभूमिगनरामकुमार२४
चौ० मुशकी परभे आप सवारा । राजसाज सँगचले
अपारा ॥ बातेंकरत हँसत इक संगा । देखि चढ़ेतीभरत
उमंगा ५ सिंह पवरि ढिगकनक महलके । चाहिय सुर
पतिजासु टहलके ॥ पहुँचे तहँ ते तजी सवारी । अगून
कीबछड़ीकर धारी ६ ममकर धरिरचना देखलावत ।
बरणत शेष बुद्धिबिसरावत ॥ पंचाबर्णमध्यछबिछाजत।
बँगलाचित्र मणिनमय राजत ७ कोमलसुमन फरशतेहि
माहीं । बिछे मखमली गुलुफस माहीं ॥ छत फानूश
झाड़ अरु ऐना । बिश्वरूप जनु कहत बनै ना ८॥

दोहा ॥

झालर गज मुक्तान की कर गाहा पच रंग ॥
जगमगात बर चांदनी मसनद तकिया संग २५
ता ऊपर सीता सहित दशरथ राजकुमार ॥
सखा सखी मधि रूप धरि राजत जनुश्रृंगार २६
भक्तबछलता समुझि लखि भूली सुधि बुधि मोहि॥
धनिधनिधनिकहिमुखकमलरह्योंसुइकटकजोहि२७
किय जुहार महि माथ धरि बोलेव तबप्रतिहार ॥
रघुकुलकमल पतंगप्रभु लक्ष्मण करत जुहार २८
कृपा दृष्टि सन्मुख करो राजकुवँर सुख धाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नयो नर्म आयो इतैं हितै सु तासु प्रणाम २६

चौ० लषणलालकी ओर निहारी। मिले मोहिं प्रभु भरि अँकवारी॥ करिआदर निजढिग बैठायो। स्वागत पूछी पानपवायो ६ सोतहिफिरप्रणामकरवायो। करि अति क्षोभ निकट बैठायो॥ दरशनकरि जबचरण निहारे। भयोभाव बर्णतकबिहारे १० पुनि देखन लाग्यों दरबारा। बीरसाजरघुबीर निहारा॥ नचैंअप्सरानृत्य प्रबीना। गांधर्वीगावहिँ लै बीना ११ तिनकीरास लास सुखरासी। देखतहीचित बढ़ो हुलासी॥ तनघनश्याम मनोहर चारू। कोनहोतबश लखतशृंगारू १२ सूरज कोटि लजावन हारो। पुरट मणिनमय मुकुटसँवारो॥ सुरभित कुटिल श्यामघुँघुरारी। छूटिरहीं जुलफैं मन हारी १३ अर्द्धचन्द श्रीविन्दमनोहर। तिलकमिहींरेखा छबिसोहर॥ सो अबर्णिबाणी सुख खानी। स्वादअलौकिक सुनतसोहानी १४॥

दो० नैनमैन शर मन्द करि घायल कियो रसाल॥
मेचक बंक सुभौहँ युग काम धनुषउरशाल ३०

चौ० कुंडल श्रवण फांस जनु डारैं। गोल कपोल रसिक्त बटपारैं॥ बिंबाधर नासा छबि नासिनि। दशन हँसनि दाड़िम कह दामिनि १५ सुरसंपति रसना रस खानी। चिबुक रसाल बदन बिधु मानी॥ कंबुग्रीव अस्कंध मनोहर। करिकरभुजभूषण युतसोहर १६ करअनुपम भूषण बरधारे। उर अमोल बनमाल सँवारे॥ उदर त्रिरेख त्रिबेनी मानो। नाभिभवँर कटिसिंह लजानो १७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऊरूजघनसुचरन सुहाये। अनुरागिनिके मन ललचाये॥
धोती पीतपुनीत उपरना। शाल सनेह जाय नहिं बरना
१८ नख शिख छबि रघुबर की गायो। कह्यो यथामति
अंत न पायो॥ श्री सिय छबि फबि किमि कह कोई।
कोटिन शशि रति रति उनहोई १९॥

दो० बरभूषण बसनादि पुनि अनुपम राज समाज॥
दियेकृपाकरसाजिकिय अमितइन्द्रशिरताज ३१
बूड़ेउँ छबि के सिंधु में लहेउं न वारापार॥
देखलायो बर नाट सुख निज समीप बैठार ३२

मधुभारछन्द॥

भा जी उमाह। निज रास चाह॥
और न उठाय। मन भरे चाय ३।

चौ० छरे छबीले छैला प्यारे। जरकसमय चीरा शिरधारे॥ कोइ श्यामल कोइ गोर सलोने। कोइ मुकुट मणि मणिडत सोने २० कोइ बांकदृग खंजन वारे। जुलफैं छुटींकिलंगी धारे॥ कुण्डल श्रवण कपोलन झलकैं। बंकभौंह घुंघुरारी अलकैं २१ जामा ललित इजार सुहायो। जरकस को पटुका मनभायो॥ भुजमृणाल करकंज मनोहर। मणिमुक्ता माला अति सोहर २२ चारुशील मणि सुखद सोहाये। लषणबीर मणि हरिहित भाये॥ अरुसु छत्रमणि परम सलोने। सिंहासन मतिसम नहिं होने २३ सुखदचंद्रमणि सिय पियजीके। रुचिररसिक मणिप्रिय सबहीके॥ चंद्रभानु मणि प्रभा अनूपा। तिमिसौंदर्य्य मणिहु अनुरूपा २४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रसिक रूपमणि गुणमणि प्यारे । बहुरि शील मणि सुखद सँवारे ॥ रसमणिधीर हीरमणि चारू । रचित रामहित चरित उदारू २५ ॥

दो० अंतरबाहेर को लखत अतिशय प्यारेनर्म ॥
सखाशिरोमणिरामके इन सम धन्य न पर्म ३३
येसबसखासुनर्म हरि अति उदार सुख धाम ॥
नर्म अंगऋजुवैस लखि लाजतकोटिनकाम ३४
नर्म मण्डली मध्य जब शोभित भे रघुराज ॥
चंद चांदनी केतरे पहिरि नाटका साज ३५

भुजंगप्रयात छंद ॥

सुजामा सज्यो तासुको पायजामा । पटूकादि वैसेसजी शोश सामा ॥ मणाकी बनीहैं घनी क्रांति जामें । मनो मंजु रत्ना करैबासतामें १ सितारेमयी बांकुड़ी बेलि बांकी । तथा गोखरू किर्णकीझांकि झांकी ॥ जगज्ज्योति माचो प्रभापुंज फैले । रच्योसूर्य औ चन्द्रको अंशलैलै २ अलंकार तापे सजे स्वर्ण वारे । नवो रत्नके यत्न के रंगधारे ॥ प्रभानाथ कीशीतपालों निहारों । जहां कोटि कंदर्प की दर्पवारों ३ बिदेहात्म जाकी कहां कान्ति कैसे । नजीहा दगी दृष्टिके जीह तैसे ॥ रमा औ उमा ब्रह्म शक्त्यादि जोहैं । चकीसी जकीसी गुनै अब को हैं ४ सजी संगवारी सखी वृंदकेती । मनोसीयआनंत्यके बिंबहेती ॥ तहांरामतेते तहां रूप ठान्यो । सु मायाकरी ना कोऊ भेद जान्यो ५ महानन्द के कन्दमें नर्मफूले । फुले फूल सोरभ्य के भृंगभूले ॥ गहे हाथसोंहाथयों देत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फेरी। समा ताल मालादि सों नाद केरी ६ थकेसेछके सेजकेनर्म ह्वेगे। महाब्रह्मआनन्दकेरूपवेगे॥ बिमानी भये देविके वृन्दहर्षैं। घनेमंजु मंदारके पुष्पबर्षैं ७॥

दोहा॥

रास चौकमें कमल यक दल सहस्र परमान॥
दलन सखा मधि कर्णिका सोहे रघुकुल भान ३६
चमर छत्र व्यजनादि सब सौंज सखन के हाथ॥
मच्यो लासरस रासको देखन हार सनाथ ३७

चौ० नाच गान लखि बर्षैं फूला। गति निहार सुर तिय अनकूला॥ इकइकके बिच राजिव नैना। मण्डल बांधि नचैं सह चैना २६ लगै सोहावन पावन राती। सुख समाज नहिं बरणि सिराती॥ बजतमृदंग सरंगी बीना। बेनु रबाब सुखद स्वर झीना २७

दो० मिलि चौरासी सोहैं चौरासी के खेद॥
रसनाकेसुरनरनकी रसनाकिमिकहभेद ३८

चौ० सखीचारुशीला सुखदाई। बिमला बिमल बिनोद बढ़ाई॥ चारुसुशीला सुभगा न्यारी। अरुअह्लाद सुशीला प्यारी २८ चन्द्रकला सबकला प्रबीना। सुखदप्रेमशीलाआसीना। कमलानयनकमलछबि हरणी। सखी अनन्त मुख्य बसु बरणी २६ गहनिसौंज कर हँसनि सुवानी। सीयकृपा किमि कहौं बखानी॥ परमानन्द अपनपो भूले। सुखको स्वप्नलखौं अनुकूले ३० को हम कहां बिसरि तन गयऊ। राघव की शोभा मन लयऊ॥ ह्वै बलिहारि चरणशिर डार्यो। राघव गोद

स्वरूपनिहाऱ्यो ३१ तहँतेचल महलको प्यारे। गज
रथतुरँग अनेकसँवारे ॥ चोबदारबल्लम बरदारा। करत
शोर जागरे अपारा ३२ बोल नकीब गाव गुण गा-
यक। आगेसरैं करैं बहुपायक॥ तखतरवां पर नटीअ-
लापैं। घटीदेखि निज सुरतिय तापैं ३३ राजकुमार
छबीलेबांके। चंचलचारु तुरंगन हांके ॥ श्याम करन
बहुरंग अपारा। कौनभांति कहि लहै सो पारा ३४ हा-
थी हरिने मोर खेलौने। बारूदी छूटैं अति लोने ॥ भूचं-
पादि अनार छुटावैं। राजकुंवर तहँ अश्व कुदावैं ३५
फफकत फरक फुरक्कत आछे। चलेजातराघवके पाछे॥
मेलेजाय बराबर बाजी। प्यारे की बातनभो राजी ३६
लषण लालदहिने करिमुशकी। बातैंकरतआपनेरसकी॥
पहुंचेराजमहलकेद्वारे। दैडंका जागरे पुकारे ३७ तीजी
डेउढ़ीतजीसवारी। छठयेंनृपकीसभानिहारी॥ गुरुविप्रन
कहँकीनप्रणामा। रघुवंशीवृद्धनसुखधामा ३८ भ्रात
सखनयुत नृपपद परशे। देखिसमाज भूपमणिहरषे॥
शीशघ्राणकरिगोद बिठाई। माताकेढिगदीनपठाई ३९
देखिबदन जननी हरषानी। राईलोन उतार्‌यो पानी ॥
मृदुबस्त्रनकै फरश बिछायो। भाइसखन युत तहँबैठा-
यो ४० कंचन थारी ब्यञ्जन नाना। परुसेभांति हिये
हुलसाना ॥ निजकरकमल खवावति माता। परमप्रेम
पुल कावलि गाता४१जबैकौलमम मुखमेंदीन्हा। अद्भुत
स्वादपायसुखलीन्हा ॥ राघवको जो रुचै प्रकारा। मोहिं
सरहिनिजकरमुखडारा४२ भयोंतृप्त अतिप्रेमअनन्दा।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अचवन पानपायसुखकंदा ॥ करिप्रणाम मातनकोनीके । लहिअशीष मन भावन जीके ४३ चले आपनेकनक निकेता । अतरपानमांहिआदरदेता ॥ शयन भवनतकगे माहिं लैकै । बिदाकीन अतिआदर कैकै ४४ करिप्रणाम निजकरी सवारी । खास महलकी करयोतयारी ॥ खुली आंखिइतनेमें मोरी । लख्यांन अवधमनोहरखोरी ४५ ॥

दोहा ॥

बिरह दशा भइजागरण गुण बर्णन धृतहानि ॥
गुणमणि नन्दकिशोर को रामदास दिय ज्ञान ३६
कृपारूप श्री जानकी दास प्रेम रस पीन ॥
मेरे चित उद्वेग लखि कहि सुभावना दीन ४०
सो धन लहिकै धनी ह्वै करो प्रेम व्यापार ॥
नफा गुरू की कृपाते घटो कर्म निज धार ४१
रसिकन के आनन्द हित कीन्हों स्वप्नप्रकाश ॥
याते स्वप्नप्रकाशही नाम धरेउँ सुखरास ४२
उनइससै उनइस लखौ बिक्रम बर्ष प्रमान ॥
चैत्र सुदी एकादशी पूरो भो सुखखान ४३
अब सुबंशनिज लिखतहौं जिनकी पुण्यसुभाय ॥
मिले लषणसियराम म्वहिं अबिरलभक्ति बढ़ाय ४४
जो कोउ याको पढ़हिं अरु गुनहिं सुभक्ति सचेत ॥
तेहि मिलिहैं सियराम सह अंशनि दयानिकेत ४५

निज बंश ॥

रोला छंद ॥

ख्यात दुबे जय राज मऊके कान्यकुब्जवर ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सद्ब्रह्म पद लीन प्रज्ञ सोहत जगतीपर ॥
मोतीलालद्विवेन्द्र तनययुगनृपतिधर्मधुर ।
सदानन्दशिवलालनामबरयशीजौनपुर १
सदानंदके उभय सुवन नृप नीति बखानी ।
विज्ञविदित भे रामदीन राजा शुचिदानी ॥
शिव सहाय सुत तासु भये बाबूविज्ञानी ।
मणिकर्णिकाशरीरत्यागिलहिगतिमनमानी२
गुणमणिनंदकिशोर तासुहरिजन गुणभाषे ।
रामचन्द्रपदकमल मधुपइवरस नितचाखे ॥
भक्तिअनूपम हित्त नित्त चित भे अभिलाषे ।
कथारसिक सतसंग सदा सज्जन कोराखे ३

दो० सदा नन्द के लघु सुवन बाबू ठाकुर दीन ॥
ऋषिवतकाशी वास करि भयेब्रह्मलयलीन ४६

पद्धटिकाछन्द ॥

रघुबरसहायबाबूसुतासु । नितप्रतिब्रतकाशीसुवासु ॥
भेसुवनतासुयाध्याप्रसाद।लहिमुक्तिप्रागगुनिजगतबाद १

दो० इहां ढिठाई जानि कै निज कुल बर्णन कीन ॥
क्षमियोचूक बिचारि कै बुध जन संत प्रबीन ४७
पतितनके उद्धार हित संत मही बिचरंत ॥
नमोनमो श्रीगुरु चरणमहिमाजासु अनन्त ४८

इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor